कवीन्द्र रवीन्द्र का वन महोत्सव

घनश्याम सक्सेना

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर ने श्रावण के बाईसवें दिन यानी 'बाइशे श्रावण' 1908 ई. को वृक्षारोपण संस्कार समारोह का प्रारंभ किया था। शांति निकेतन की उनकी शिक्षा का तो सारा ढाँचा ही प्रकृति-आधारित था। यह पर्यावरण-मित्र जीवन शैली की दिशा में वचनात्मकता से रचनात्मकता की ओर जाने का मॉडल था।

छाया : प्रहलाद कुमार

एक छोटा-सा रंगमंच सजाया जाता था। उस पर दस से बारह वर्ष की आयु के पाँच बालक पंचभूतों के प्रतीक स्वरूप रंग-बिरंगी आकर्षक पोशाकों में खड़े होते थे। ये पंचमहाभूत हैं– पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। जीवन सहित यही पंचभूत तो हमारा पर्यावरण हैं। गुरुदेव हमारे किशोरों को जब संस्कारक्षम पर्यावरण-मित्र बना रहे थे तब तो समाज में पर्यावरण शब्द का चलन भी नहीं हुआ था।

आश्रम के एक कोने में जब यह रंगमंच तैयार हो जाता था और उस पर पंचमहाभूतों के प्रतीक किशोर अवतरित हो जाते थे तभी दूसरे कोने से एक पालकी आती थी, जिसमें एक छोटा-सा पौधा 'बालतरु' विराजमान रहता था। शांति निकेतन के किशोर और युवा इस पालकी के साथ ससमारोह चलते थे। कोई तालपत्र का छत्र बालतरु पर झुलाता था तो कोई सुडौल टहनियों के चँवर डुलाता था। शंख, मंजीरे, मृदंग बजते थे। कवीन्द्र रवीन्द्र स्वरचित बंगला गीत गाते थे और उनके साथ शांति निकेतन गुरुकुल के समवेत स्वर गूँजते थे :

आय आय आय आमादेर अंगने!
अतिथि बालतरु दल!
तोदेर नवीन पल्लवे। गाचूक आलोक सवितार।
ये पवने वनवल्लभे! मर्मर गीत उपहार।।

आओ आओ आओ रे! हमारे आंगन, अतिथि बालतरु रे! नाचे सूरज का आलोक तुम्हारे नव पल्लव में। मिलें गीत-उपहार तुम्हें पवन वन-वल्लभ से। सावन की फुहारें बरसायें तुम पर आशीर्वाद।

फिर एक और गीत तथा इसके पश्चात वृक्षरोपण :

ओहे नवीन अतिथि! तुमि नूतन कि तुमि चिरंतन।
युगे-युगे कोथा तुमि छिले संगोपने!!

अरे ओ नये अतिथि! तुम नवीन हो कि चिर-प्राचीन? युगों-युगों से कहाँ छिपे बैठे थे रे?

अब वास्तविक पौधारोपण होने के पहले पंचमहाभूत वेषधारी बालकों की बारी आती थी। पृथ्वी वेषधारी के आगे बढ़ते ही गाया जाता था :

तुम अपनी गोद में ले लो
कोख का यह धन।
बालतरु को चिरमित्रता की
दीक्षा दो इस शुभ दिन।।

पृथ्वी से आग्रहपूर्वक कहा जाता था :

भर दो कठोरता इसकी जड़ों में,
कोमलता फूल-पत्तियों में,
कहीं यह भूल न जाय, हे मातृचरण!
फलों से लदते ही पक्षियों को देना
अन्नसत्र-निमंत्रण!

पृथ्वी के बाद जल से प्रार्थना की जाती :

वर्षाऋतु में मेघमृदंग बजाकर इसे जगाना!
जलद से कहना इसमें कर दे जलज की प्रतिष्ठापना!!

तेज को संबोधित निवेदन था :

प्रथम प्रकृति पुरुष! इस पर अपनी शुभदृष्टि सदैव रखना।
इसे पुष्प-फल सार्थक रखने हेतु इसके किसलयों में रहना।।

वायु से करबद्ध आवेदन था :

अठखेलीरत बालतरु की झोली भर देना संगीत से!
पत्तों को प्रोत्साहित करना अपने ताल पर झूमने की सीख से।

अंत में आकाश को स्मरण कराया गया :

तुम्हारे बुलावे पर बालतरु ने धारण किया मूर्तरूप!
यह बने तरुणतरु, बरसाओ करुणा की धूप!!

गुरुदेव टैगोर और उनकी शिष्यमंडली के समवेत स्वरों के बीच, काव्यात्मक आवाहनों के साथ माटी की गोद में इस बालतरु को रोपते समय किसी दत्तक समारोह जैसा आभास मिलता था। वृक्षारोपण के पश्चात बालतरु को आशीष देने के लिए मांगलिक गाये जाते थे :

पंचमहाभूतों की कृपादृष्टि तुम पर बनी रहे।
शतमुखी बनो। चिरंजीवी हो!

इस मांगलिक के अंत में स्वयं गुरुदेव अपना नाम जोड़ देते थे :

रवीन्द्रेर कंठ होते ये संगीत तोमार मंगले।
मिलिलो मेघेर मंद्रे, मिलिलो कदंब परिमले!!

तुम्हारे इस मंगल पर रवीन्द्र-कंठ से निकले हुए संगीत में मेघों के मंद्र-स्वर और कदंब की सुगंध मिली हुई है

गुरुदेव के गीतों का भावार्थ साक्षात पर्यावरण-शिक्षा है। प्रकाशोन्मुख वह बालतरु वृक्ष बनेगा। कीट, पतंग, पशु-पक्षियों को भोजन आश्रय देगा। पालने से चिता तक हमारा साथी रहेगा।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं।)